SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

पंडित जवाहरलाल नेहरूः समाजवाद

महेन्द्र पंडित, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखण्ड
बलदेव राम, Ph.D., शोध निदेशक, राजनीति विज्ञान विभाग
जगन्नाथ जैन महाविद्यालय, झुमरी तिलैया, कोडरमा, झारखण्ड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Authors
महेन्द्र पंडित, शोधार्थी
बलदेव राम, Ph.D.

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 22/03/2024
Revised on : -----
Accepted on : 24/05/2024
Overall Similarity : 00% on 15/05/2024

Plagiarism Checker X - Report
Originality Assessment
Overall Similarity: 0%
Date: May 15, 2024
Statistics: 0 words Plagiarized / 1856 Total words
Remarks: No similarity found, your document looks healthy.

शोध सार

आधुनिक विश्व में समाजवाद एक लोकप्रिय अवधारणा बन गई है। समाजवाद का विचार हालांकि आधुनिक नही है। यह विचार प्राचीनतम में भी प्रचलित थी लेकिन इनका वैज्ञानिक अध्ययन का अभाव था और न हीं इसे अपनाया गया। कार्ल मार्क्स पहला ऐसा विचारक था जिसने समाजवाद का एक व्यवस्थित, सुसंगठित व वैज्ञानिक अध्ययन किया और तार्किक दृष्टिकोण से कार्ल मार्क्स ने समाजवाद की अवधारणा को दुनिया के सामने रखा। क्रमशः 1848 और 1867 में प्रकाशित कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो और दास कैपिटल के रूप में उनके दो रचनाओं ने वैज्ञानिक समाजवाद के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। समाजवाद का विचार वर्गविहीन समाज और सामुदायिक जीवन जैसे नवीन दर्शन के साथ लोकप्रिय हुआ। भारत के स्वतंत्रता सेनानी पंडित जवाहरलाल नेहरू इस अवधारणा से काफी हद तक प्रभावित थे और पंडित नेहरू ने भारत में समाजवाद की स्थापना के लिए कई कार्य भी किये, जैसे उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था को देश में लागू किया। इसके अलावा उन्होंने कृषि विकास तथा महात्मा गांधी के विचारों को अर्थात् लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास को समेटने का पूर्ण प्रयास किया। पंडित नेहरू ने समाजवादी अवधारणा को हीं भारत की मूल समस्या का हल माना इसके लिए उन्होंने आजादी के पहले भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में कई आंदोलनों का नेतृत्व करके समाजवादी अवधारणा को धरातल पर लाने का प्रयास किया। इसके अलावा उन्होंने आजाद भारत में जब वे देश के प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए कई ऐसे समाजवादी कार्य किए ताकि देश में समाजवाद के माध्यम से गरीबी अमीरी का फासला मिट सके और इसे भारत के धरातल पर उतारने के लिए

उन्होंने कई उल्लेखनीय कार्य किए जैसे जमीनदारी प्रथा उन्मूलन कार्य, कृषि के विकास हेतु विभिन्न सुधार, उद्योगों तक सबकी पहुंच, सार्वजनिक व निजी उद्योगों का विकास, कल्याणकारी नियोजन राज्य हेतु कार्य, औद्योगिकीकरण पर बल, स्वतंत्रता व समानता दोनों पर बल, लोकतांत्रिक समाजवाद को हीं देश के भविष्य का निर्धारक मानते थे।

मुख्य शब्द

समाजवाद, लोकतांत्रिक, कल्याणकारी राज्य, वैज्ञानिक समाजवाद.

प्रस्तावना

समाजवाद एक ऐसी विचारधारा है जिसमें संपत्ति तथा उत्पादन के साधन के स्वामित्व जहाँ राज्य या सरकार होती है। समाजवाद इस विचारधारा पर आधारित होता है जहां संसाधनों व उत्पादन के साधनों पर हक पूरा समाज का हों अर्थात् इस समाजवादी अवधारणा के तहत समाज को किसी एक व्यक्ति से हमेशा आगे रखता है। यह पूंजीवाद जैसी विचारधारा को विरोध करता है। यह विचारधारा सहयोग पर आधारित है। यह विचारधारा आर्थिक बिषमता को खत्म करता है। यह लोकतांत्रिक संस्था में ही विश्वास करता है। नेहरू समाजवाद के मूल्यों को पर हीं भारत में समाजवाद स्थापित करना था। वह चाहता था कैसी देश में समाजवादी विचारों को लाया जाय इसके प्रयास के लिए उन्होंने आजादी के पहले व आजादी के बाद जब वह देश के प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने कई कार्यों को करके धरातल पर उतारने का प्रयास किये जैसेः कल्याणकारी राज्य व नियोजन, कल्याणकारी राज्य नियोजन समानता व स्वतंत्रता के पक्षकार लोकतंत्रीय समाजवाद की स्थापना।

शोध विधि

ऐतिहासिक, तुलनात्मक, विश्लेषणात्मक।

शोध का उद्देश्य

पंडित नेहरू के लोकतांत्रिक समाजवाद को विश्लेषित करना, तथा नेहरू ने भारत में समाजवाद स्थापित करने के लिए क्या–क्या प्रयास किये। प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य है।

आधुनिक विश्व में समाजवाद एक लोकप्रिय अवधारणा बन गई है। समाजवाद का विचार हालांकि आधुनिक नही है। यह विचार प्राचीनतम में भी प्रचलित थी, लेकिन इनका वैज्ञानिक अध्ययन का अभाव था और न हीं इसे अपनाया गया। कार्ल मार्क्स पहला ऐसा विचारक था जिसने समाजवाद का एक व्यवस्थित, सुसंगठित व वैज्ञानिक अध्ययन किया और तार्किक दृष्टिकोण से कार्ल मार्क्स ने समाजवाद की अवधारणा को दुनिया के सामने रखा। क्रमशः 1848 और 1867 में प्रकाशित कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो और दास कैपिटल के रूप में उनके दो रचनाओं ने वैज्ञानिक समाजवाद के विकास में मील का पत्थर साबित हुआ। समाजवाद का विचार वर्गविहीन समाज और सामुदायिक जीवन जैसे नवीन दर्शन के साथ लोकप्रिय हुआ। भारत के स्वतंत्रता सेनानी पंडित जवाहरलाल नेहरू इस अवधारणा से काफी हद तक प्रभावित थे और पंडित नेहरू ने भारत में समाजवाद की स्थापना के लिए कई कार्य भी किये।

राजनीतिक क्षेत्र में नेहरू पूरी तरह उदारवादी मान्यताओं में विश्वास करते थे। लोकतंत्र के प्रति उनकी आस्था बहुत गहरी थी लेकिन आर्थिक क्षेत्र में वे अहस्तक्षेप की नीति के समर्थक नही थे। वे भारत की आर्थिक समस्याओं का हल समाजवाद में पाते थे। लोकतंत्र तथा समाजवाद, दोनों के प्रति उनकी आस्था ने उन्हें 'लोकतांत्रिक समाजवाद' का प्रतिपादक बना दिया। वे समाजवाद एवं लोकतंत्र को एक–दूसरे का पर्यायवाची मानते थे। नेहरू सच्चा लोकतंत्र उन्हें हीं मानते थे जहां विषमताओं का अभाव हो। वे लोकतंत्र व समाजवाद का समन्वय करना चाहते थे। वे भारत में लोकतंत्रीय समाजवाद का स्थापना करना चाहते थे। वे अन्य समाजवादियों की तरह यह मानते थे कि आर्थिक स्वतंत्रता के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता एक श्रम के समान हीं है।

वर्ष 1936 में पंडित नेहरू ने राष्ट्रीय योजना के अध्यक्ष के रूप में औद्योगिकीकरण द्वारा सुदृढ़ भारत की

संकल्पना की थी और इसे आगे बढ़ाकर भारत में तीव्र औद्योगिकीकरण का राह आसान किया। इसमें कृषि विकास तथा महात्मा गांधी के विचारों को अर्थात् लघु एवं कुटीर उद्योगों के विकास को समेटने का पूर्ण प्रयास किया गया। पंडित नेहरू ने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अपने प्रधानमंत्री पद पर रहते हुए उन्होंनें पंचवर्षीय योजना की शुरूआत की, पहला पंचवर्षीय योजना का मुख्य लक्ष्य कृषि के विकास पर पूरी तरह से केंद्रित था। वहीं दूसरी पंचवर्षीय योजना का लक्ष्य औद्यौगिकीकरण के बढ़ावा पर केंद्रित था। इसी पंचवर्षीय योजना में भिलाई, राउरकेला और दुर्गापुर इस्पात संयंत्र की स्थापना की गई थी। यह पंचवर्षीय योजना की योजना अवधी 1956 से 1961 थी जो कि महलानोबिस मॉडल पर आधारित थी। पहला पंचवर्षीय योजना यूएसएसआर के हेराल्ड–डोमर मॉडल पर आधारित थी जिसका अवधि 1951 से 1956 तक था। नागपुर सम्मेलन मे उन्होने सहकारी खेती का विचार प्रस्तुत किया।

नेहरु समाजवाद के समर्थन थे। वे समाजवाद का समर्थन करते हुए लिखते है कि विश्व तथा भारत की समस्याओं का हल केवल समाजवादी अवधारणा में ही संभव हो सकता है। समाजवादी अवधारणा यह केवल मानवीय धारणा नही है यह मानवीय होने के साथ–साथ वैज्ञानिक आर्थिक दृष्टि से भी उचित है।

पंडित नेहरू को पहले से ही पता था कि भारतीय समस्याओं का मूल समाजवाद है इसलिए उन्होंने उधेशिका प्रस्ताव में 22 दिसम्बर 1946 में समाजवाद की चर्चा किया तथा भारतीय संविधान सभा ने इसका उल्लेख करने के साथ साथ राज्य के नीति निदेशक तत्वों के साथ साथ कुछ हद तक मौलिक अधिकारों में रखा गया है।

भारतीय संविधान का राज्य के नीति निदेशक तत्वो का मुल उद्देश्य देश में समाजवादी समाज की स्थापना करना हीं है। शासन द्वारा पंचवर्षीय योजना अपनाने का ल़क्ष्य राज्य में समाजवाद को स्थापित करना था।

वहीं 1954 में नेहरू जी के नेतृत्व में केन्द्रीय संसद ने एक प्रस्ताव के द्वारा भारत में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना के लिए कई योजनाओ का ल़क्ष्य घोषित किया और एक कल्याणकारी राज्य की ओर ले जाने का संकल्प तैयार किया गया।

1955 में अबाडी कांग्रेस प्रस्ताव के द्वारा संविधान की प्रस्तावना तथा राज्य के नीति की अवधारना को देश में प्रचारित व उसे क्रियान्वयन के लिए कई संकल्प लिए गए जैसेः

- उत्पादन के साधनों पर समाज का स्वामित्व हो।
- उत्पादन में वृद्धि हों।
- राष्ट्रीय संपत्ति का समुचित वितरण हो।
- प्रमुख उद्योग व उत्पादन के साधनों पर पूरे समाज का स्वामित्व हो।
- भूमि सुधार।
- उद्योगों में श्रमिको का हिस्सेदारी बढ़े।
- सहकारिता का प्रोत्साहन बढ़े।
- सामाजिक न्याय का बढ़ावा।

1956 के नागपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने शांतिपूर्ण और न्यायोचित साधनों द्वारा एक 'समाजवादी सहकारी' राज्य का प्रस्ताव पारित किया गया। वहीं 1962 के भावनगर अधिवेशन में तथा 1964 के भुनेश्वर अधिवेशन में लोकतांत्रिक समाजवाद की स्थापना के संकल्प को एक बार पुनः दोहराया गया।

पंडित नेहरू ने समाजवाद संकल्प को पूरा करने हेतु अपने प्रधानमंत्री काल में कई महत्वपूर्ण कार्य किएः

- नेहरू के काल में देश में सामुदायिक विकास योजनाओं का जाल बिछाया गया।
- विकास कार्यों में जनसहयोग प्राप्त करने व राज्य की शक्ति को विकेंन्द्रित करने हेतु नेहरू ने पंचायती राज की स्थापना पर बल दिया गया।
- सामाजिक संरक्षण और श्रम के क्षेत्र में भी सरकार द्वारा अनेक कानूनों का निर्माण करके श्रमिक कल्याण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाये गए।

पंडित जवाहरलाल नेहरू आर्थिक समाजवाद के पूर्ण समर्थक थे। पंडित नेहरू अपनी समाजवादी अवधारणा पर चलते हुए नेहरू ने नियोजित विकास हेतु उन्होंने मिश्रित अर्थव्यवस्था को जगह दिया। नेहरू ने तीव्र आर्थिक विकास हेतु औद्योगिक विकास को गति देने के लिए नेहरू के प्रयास से हीं बोकारो स्टील प्लांट,भिलाई स्टील प्लांट आदि कई उद्योगों के विकास पर जोर दिया। इसके अलावा नेहरू ने समाजवाद को भारत के धरातल पर उतारने हेतु उन्होंने कृषि सुधार हेतु चकबंदी, जमीनदारी प्रथा पर सुधार हेतु प्रयास किया। इसके अलावा जवाहरलाल नेहरू भारत में समाजवाद लाने हेतु कई प्रयास कियाः

- **कल्याणकारी राज्य व नियोजनः** पंडित नेहरू आर्थिक नीति के मामले में मिश्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया जिसके तहत नेहरू ने सार्वजनिक व निजी क्षेत्रों को दोनों को एक साथ काम करने का अवसर दिया। नेहरू देश को सुदृढ़ करने के लिए उन्होंने विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास हेतु विशेष बल दिए। इसके लिए उन्होंने कई आई आई टी कॉलेज जैसे रूडकी अंतरिक्ष अनुसंधान, रक्षा अनुसंधान, सैनिक हथियार हेतु विभिन्न फैक्ट्री आदी का देश में निर्माण किया गया।
- **औद्योगिकीकरण पर बलः** पंडित नेहरू औद्योगिकीकरण पर बल देकर उन्होंने ऐसे अर्थव्यवस्था का निर्माण पर बल दिया जो शहरी व ग्रमीण अर्थव्यवस्था में संतुलन स्थापित हो सके। नेहरू ने लोकतांत्रिक माध्यम से भारत में समाजवाद के स्थापन पर बल दिया। उन्होंने सभी क्षेत्रों में स्थापन पर बल दिया।
- **समानता व स्वतंत्रता के पक्षकारः** पंडित जवाहरलाल नेहरू ने लोकतंत्र के अटूट पक्षकार के साथ–साथ उन्होंने समानता व स्वतंत्रता का भी समर्थन किया। उन्होंने एक लेख में यह भी कहा था कि लोकतंत्र बिना स्वतंत्रता और समानता के निरर्थक माना जायेगा।
- **लोकतंत्रीय समाजवाद के समर्थकः** पंडित जवाहरलाल नेहरू समाजवाद का लक्ष्य लोकतांत्रिक मार्ग को हीं उचित माना है अर्थात् नेहरू लोकतांत्रिक समाजवाद के हीं समर्थक थे। नेहरू को यह पूर्ण विश्वास था कि भारत में समाजवाद की स्थापना तब हो सकती है जब भारत के लोगों में विशाल बहुमत तमाम जनसाधारण समाजवादी नीति का समर्थन करेगा। नेहरू इस पथ के लिए उन्होंने गांधी जी के जैसा हीं अहिंसा के मार्ग को चुना तथा इसके साधन भी उन्होंने शांतिपूर्ण हीं चुना। पंडित नेहरू के लिए लोकतंत्र न केवल एक शासन प्रणाली थी बल्कि एक जीवन जीने की पद्धति थी। देश के आजादी के पहले भी पंडित नेहरू को राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान नेहरू जी ने लोकतंत्र को बहुत अधिक महत्वपूर्ण माना नेहरू आर्थिक व समाजिक लोकतंत्र पर पूर्ण विश्वास रखते थे। पंडित नेहरू भारतीय समाज की समस्याओं का समाधान चाहते थे। वे मानते थे कि भारत की समस्याओं का मूल हल भारतीय समाज में समाजवाद का स्थापित हो जाने में हीं है। वास्तव में पंडित नेहरू भारतीय समाज के समस्याओं का हल चाहते थे।

  नेहरू मानवतावादी व लोकतांत्रिक समाजवाद के प्रतीक थे।

निष्कर्ष

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने भारत में समाजवाद स्थापित करने के लिए जिस प्रकार प्रयास किए वह वाकई में काबिले तारीफ था। उनके जीवन में समाजवाद जैसे अवधारणा को कार्ल मार्क्स तथा रूस की समाजवादी मॉडल ने काफी प्रभावित किया था। उनके समाजवाद में शोषण मुक्त समाज की स्थापना पर बल दिया।

पंडित नेहरू के समाजवादी अवधारणा संतुलित था अर्थात् नेहरू पूर्ण रूप से निजी संपत्ति और न हीं सार्वजनिक संपत्ति के समर्थक थे। वे गांवो,शहरों व नगरों को समान महत्व देते हुए उन्होंने पंचायती राज व शहरी स्थानीय स्वशासन दोनो के विकास हेतु कई विकास योजना पर कार्य किए। नेहरू के समाजवादी अवधारणा को संतुलित, आदर्शवादी, लोकतांत्रिक समाजवाद का नाम दिया जाता है।

नेहरू देश में जिस प्रकार समाजवाद की स्थापना को लेकर तत्पर थे, आज के राजनीतिक नेताओं को उनके विचारों के पथ पर चलने की सख्त आवश्यकता है, क्योंकि आज इस वैश्वीकरण के दौर में जिस प्रकार भारत में

निजीकरण का बढ़ावा दिया जा रहा है ऐसे में नेहरू के समाजवाद की अवधारणा हमें पथ–पथ पर याद दिलाती रहेगी।

संदर्भ सूची

1. मल्होत्रा, एस.आर. (1975) *इंडियण फॉरेन पॉलिसिज– दि नेहरू एस,* विकास प्रकाशन, नोएडा उत्तर प्रदेश पृ. 145।
2. दीक्षित, जे.एन. (2021) *भारत की विदेश नीति तथा इसके पडोसी,* प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.203।
3. सिंह, राजबाला (2005) *भारत की विदेश नीति,* आविष्कार प्रकाशन, कानपुर पृ. 67।
4. कुमार, संजय एवं जायसवाल, मनुराग (2007) *युद्ध एवं शांति की अवधारणा,* प्रभात प्रकाशन 2021,नई दिल्ली पृ. 60।
5. गौतम, ब्रजेन्द्र प्रताप (2002) *भारत की विदेश नीति,* अरविंद प्रकाशन मेरठ, पृ. 89।
6. नेहरू जवाहर लाल (1946) *भारत एक खोज,* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, ऑक्सफोर्ड इंगलैण्ड पृ.123।

****